संचालनालय, चिकित्सा शिक्षा
6वीं मंजिल, सतपुड़ा भवन, भोपाल(म.प्र.)

टेंपोरल बोन लैब

विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार भारत में करीब 6.3 प्रतिशत लोग बहरेपन का शिकार होते है। 0.1 प्रतिशत लोग बहरेपन के कारण विकलांगता में जीवन व्यतीत करते है। बहरेपन के बहुत से कारण है, जिन्हें रोका जा सकता है। कई ~~के~~ पर इलाज हेतु ऑपरेशन की आवश्यकता होती है। कान शरीर का ऐसा भाग है, जो मस्तिष्क में महत्वपूर्ण कोशिकाओं से घिरा है। कान के जटिल ऑपरेशन को करने हेतु स्कल में टेंपोरल बोन नामक हड्डी में ड्रिल कर कान के भीतरी भाग में पहुँचा जाता है। यह प्रक्रिया बहुत ही सावधानी पूर्वक की जाती है। जिससे कान के आस पास के अंदरूनी नाजुक भाग को चोट न पहुँचे ।

इस तरह के ऑपरेशन करने हेतु चिकित्सकों के प्रशिक्षण के लिए भारत एवं मध्यप्रदेश सरकार के सौजन्य से मध्यप्रदेश के दो चिकित्सा महाविद्यालय (भोपाल, सागर) में टेंपोरल बोन लैब की स्थापना की जा रही है। इस लैब में चिकित्सक टेंपोरल बोन पर अभ्यास कर पायेंगे एवं ऑपरेशन की नई तकनीक को विकसित कर पायेंगे। टेंपोरल बोन में ड्रिल कर, ना सिर्फ कान के भीतरी भाग पर अपितु मस्तिष्क के ट्यूमर्स तक भी पहुँचकर उन्हें निकाला जा सकता है।

अभ्यास हेतु टेंपोरल बोन किसी मृतक के शरीर से ली जायेगी, जो संबंधित चिकित्सा महाविद्यालय के एनाटॉमी एवं एफएमटी विभाग के समन्वय से उपलब्ध करायी जावेगी। रू 1.07 करोड़ से बने यह टेंपोरल लैब नेशनल प्रोग्राम फॉर प्रिवेंशन एण्ड कंट्रोल ऑफ डेफनेस (NPPCD) के अंतर्गत खोली जा रही है। यह प्रदेश में अपनी तरह की पहली लैब होगी ।

मध्यप्रदेश में इस स्वास्थ्य सुविधा के अभाव में मरीज को बाहर जाकर इलाज कराना पडता था, इस लैब के आने से ऐसे प्रशिक्षित चिकित्सक उपलब्ध होगे जो राज्य में ही मरीज का इलाज कर पायेंगे।